الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ﴿۵۴﴾ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿۵۵﴾ ع ٣

परहेज़ गार बाग़ों और नहर में हैं सच की मजलिस में अ़ज़ीम कुदरत वाले बादशाह के हुज़ूर[82]

ايـاتها ٧٨ ﴿۵۵ سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَكِّيَّةٌ ٩٧﴾ ركوعاتها ٣

सूरए रह़मान मक्किय्या है, इस में अठत्तर आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اَلرَّحْمٰنُ ﴿۱﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿۲﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿۴﴾

रह़मान ने अपने मह़बूब को कुरआन सिखाया[2] इन्सानिय्यत की जान मुह़म्मद को पैदा किया مَاكَانَ وَمَايَكُوْن का बयान उन्हें सिखाया[3]

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿۵﴾ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿۶﴾ وَ

सूरज और चांद हिसाब से हैं[4] और सब्ज़े और पेड़ सज्दा करते हैं[5] और

السَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ﴿۷﴾ اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ﴿۸﴾ وَ

आस्मान को अल्लाह ने बुलन्द किया[6] और तराज़ू रखी[7] कि तराज़ू में बे ए'तिदाली (ना इन्साफ़ी) न करो[8] और

اَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿۹﴾ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا

इन्साफ़ के साथ तोल क़ाइम करो और वज़्न न घटाओ और ज़मीन रखी

لِلْاَنَامِ ﴿۱۰﴾ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ﴿۱۱﴾ وَالْحَبُّ

मख़्लूक़ के लिये[9] इस में मेवे और ग़िलाफ़ वाली खजूरें[10] और भुस

82 : या'नी उस की बारगाह के मुक़र्रब हैं। 1 : सूरए रह़मान मक्किय्या है, इस में तीन 3 रुकूअ़ और छिहत्तर 76 या अठत्तर 78 आयतें, तीन सो इक्यावन 351 कलिमे, एक हज़ार छ[6] सो छत्तीस 1636 ह़र्फ़ हैं। 2 **शाने नुज़ूल :** जब आयत "اُسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ" नाज़िल हुई कुफ़्फ़ार ने कहा रह़मान क्या है हम नहीं जानते, इस पर अल्लाह तआ़ला ने अर्रह़मान नाज़िल फ़रमाई कि रह़मान जिस का तुम इन्कार करते हो वोही है जिस ने कुरआन नाज़िल फ़रमाया और एक क़ौल येह है कि अहले मक्का ने जब कहा कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) को कोई बशर सिखाता है तो येह आयत नाज़िल हुई और अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया कि रह़मान ने कुरआन अपने ह़बीब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को सिखाया। (خازن) 3 : इन्सान से इस आयत में सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुराद हैं और बयान से "مَاكَانَ وَمَا يَكُوْنُ" का बयान, क्यूं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अव्वलीन व आख़िरीन की ख़बरें देते थे। (خازن) 4 : कि तक़्दीरे मुअ़य्यन के साथ अपने बुरूज व मनाज़िल में सैर करते हैं और इस में ख़ल्क़ के लिये मनाफ़ेअ़ हैं अवक़ात के ह़िसाब, सालों और महीनों का शुमार इन्हीं पर है। 5 : हुक्मे इलाही के मुत़ीअ़ हैं। 6 : और अपने मलाएका का मस्कन और अपने अह़काम का जाए सुदूर बनाया। 7 : जिस से अश्या का वज़्न किया जाए और उन की मिक़्दारें मा'लूम हों ताकि लेन देन में अ़द्ल क़ाइम रखा जाए। 8 : ताकि किसी की ह़क़ तलफ़ी न हो। 9 : जो इस में रहती बसती है ताकि इस में आराम करें और फ़ाएदे उठाएं। 10 : जिन में बहुत बरकत है।

www.dawateislami.net

ذُوالْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٣﴾ خَلَقَ

के साथ अनाज[11] और ख़ुश्बू के फूल तो ऐ जिन्नो इन्स तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे[12] उस ने

الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ

आदमी को बनाया बजती मिट्टी से जैसे ठीकरी[13] और जिन्न को पैदा फ़रमाया आग के

نَّارٍ ﴿١٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٦﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ

लूके से[14] तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे दोनों पूरब का रब और दोनों

الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٨﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

पश्चिम का रब[15] तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उस ने दो समुन्दर बहाए[16] कि देखने

يَلْتَقِيٰنِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

में मा'लूम हों मिले हुए[17] और है उन में रोक[18] कि एक दूसरे पर बढ़ नहीं सकता[19] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

झुटलाओगे उन में से मोती और मूंगा निकलता है तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَـَٔاتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٢٤﴾ فَبِاَيِّ

झुटलाओगे और उसी की हैं वोह चलने वालियां कि दरिया में उठी हुई हैं जैसे पहाड़[20] तो अपने

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٥﴾ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ النصف ع

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है[21] और बाक़ी है तुम्हारे रब की ज़ात

11 : मिस्ल गेहूं, जव वग़ैरा के **12 :** इस सूरए शरीफ़ा में येह आयत इकत्तीस 31 बार आई है, बार बार ने'मतों का ज़िक्र फ़रमा कर येह इर्शाद फ़रमाया गया है कि अपने रब की कौन सी ने'मत को झुटलाओगे, येह हिदायत व इर्शाद का बेहतरीन उस्लूब है ताकि सामेअ़ के नफ़्स को तम्बीह हो और उसे अपने जुर्म और ना सिपासी (नाशुक्री) का हाल मा'लूम हो जाए कि उस ने किस क़दर ने'मतों को झुटलाया है और उसे शर्म आए और वोह अदाए शुक्र व ताअ़त की तरफ़ माइल हो और येह समझ ले कि **अल्लाह** तआ़ला की बे शुमार ने'मतें उस पर हैं। **हदीस :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह सूरत मैं ने जिन्नात को सुनाई वोह तुम से अच्छा जवाब देते थे जब मैं आयत "فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ" पढ़ता वोह कहते : ऐ रब हमारे ! हम तेरी किसी ने'मत को नहीं झुटलाते तुझे हम्द (رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ غَرِيْبٌ) **13 :** या'नी ख़ुश्क मिट्टी से जो बजाने से बजे और कोई चीज़ खन्खनाती आवाज़ दे, फिर उस मिट्टी को तर किया कि वोह मिस्ल गारे के हो गई, फिर उस को गलाया कि वोह मिस्ल सियाह कीचड़ के हो गई। **14 :** या'नी ख़ालिस बे धूएं वाले शो'ले से **15 :** दोनों पूरब और दोनों पश्चिम से मुराद आफ़्ताब के तुलूअ़ होने के दोनों मक़ाम हैं, गरमी के भी और जाड़े के भी, इसी तरह गुरूब होने के भी दोनों मक़ाम हैं। **16 :** शीरीं और शोर **17 :** न उन के दरमियान ज़ाहिर में कोई फ़ासिल न हाइल। **18 : अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत से **19 :** हर एक अपनी हद पर रहता है और किसी का ज़ाएक़ा तब्दील नहीं होता। **20 :** जिन चीज़ों से वोह कश्तियां बनाई गईं वोह भी **अल्लाह** तआ़ला ने पैदा कीं और उन को तरकीब देने और कश्ती बनाने और सनाई करने की अ़क़्ल भी **अल्लाह** तआ़ला ने पैदा की और दरियाओं में उन कश्तियों का चलना और तेरना येह सब **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत से है। **21 :** हर जानदार वग़ैरा हलाक होने वाला है।

www.dawateislami.net

ذُو الْجَلٰلِ وَ الْاِكْرَامِ ﴿۲۷﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۸﴾ يَسْـَٔلُهٗ مَنْ

अज़मत और बुज़ुर्गी वाला[22] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उसी के मंगता हैं जितने

فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ﴿۲۹﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

आस्मानों और ज़मीन में हैं[23] उसे हर दिन एक काम है[24] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۰﴾ سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿۳۱﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

झुटलाओगे जल्द सब काम निबटा कर हम तुम्हारे हिसाब का क़स्द फ़रमाते हैं ऐ दोनों भारी गुरौह[25] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۲﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ

झुटलाओगे ऐ जिन्नो इन्सान के गुरौह अगर तुम से हो सके कि

اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿۳۳﴾

आस्मानों और ज़मीन के कनारों से निकल जाओ तो निकल जाओ जहां निकल कर जाओगे उसी की सल्तनत है[26]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۴﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّ

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे तुम पर[27] छोड़ी जाएगी बे धूएं की आग की लपट और

نُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿۳۵﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۶﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ

बे लपट का काला धूआं[28] तो फिर बदला न ले सकोगे[29] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे फिर जब आस्मान

---

22 : कि वोह ख़ल्क़ के फ़ना के बा'द उन्हें ज़िन्दा करेगा और अबदी ह़यात अ़ता फ़रमाएगा और ईमानदारों पर लुत़्फ़ो करम करेगा। **23 :** फ़िरिश्ते हों या जिन्न या इन्सान या और कोई मख़्लूक़ कोई भी उस से बे नियाज़ नहीं सब उस के फ़ज़्ल के मोह़ताज हैं और ज़बाने ह़ाल व क़ाल से उस के ह़ुज़ूर साइल। **24 :** या'नी वोह हर वक़्त अपनी क़ुदरत के आसार ज़ाहिर फ़रमाता है, किसी को रोज़ी देता है, किसी को मारता है किसी को जिलाता (पैदा करता) है, किसी को इ़ज़्ज़त देता है किसी को ज़िल्लत, किसी को ग़नी करता है किसी को मोह़ताज, किसी के गुनाह बख़्शता है किसी की तक्लीफ़ रफ़्अ़ करता है। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत यहूद के रद में नाज़िल हुई जो कहते थे कि अल्लाह तआ़ला सनीचर के रोज़ कोई काम नहीं करता, उन के क़ौल का बुत़्लान ज़ाहिर फ़रमाया गया। मन्क़ूल है कि एक बादशाह ने अपने वज़ीर से इस आयत के मा'ना दरयाफ़्त किये, उस ने एक रोज़ की मोहलत चाही और निहायत मुतफ़क्किर व मग़्मूम हो कर अपने मकान पर आया, उस के एक ह़बशी गुलाम ने वज़ीर को परेशान देख कर कहा कि ऐ मेरे आक़ा आप को क्या मुसीबत पेश आई बयान कीजिये, वज़ीर ने बयान किया तो गुलाम ने कहा कि इस के मा'ना बादशाह को मैं समझा दूंगा, वज़ीर ने उस को बादशाह के सामने पेश किया तो गुलाम ने कहा कि ऐ बादशाह अल्लाह की शान येह है कि वोह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को रात में और मुर्दे से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दे से मुर्दा और बीमार को तन्दुरुस्ती देता है और तन्दुरुस्त को बीमार करता है, मुसीबत ज़दा को रिहाई देता है और बे ग़मों को मुसीबत में मुब्तला करता है, इ़ज़्ज़त वालों को ज़लील करता है ज़लीलों को इ़ज़्ज़त देता है, मालदारों को मोह़ताज करता है मोह़ताजों को मालदार, बादशाह ने गुलाम का जवाब पसन्द किया और वज़ीर को हुक्म दिया कि इस गुलाम को ख़िल्अ़ते वज़ारत पहनाए, गुलाम ने वज़ीर से कहा : ऐ आक़ा येह भी अल्लाह तआ़ला की एक शान है। **25 :** जिन्नो इन्स के **26 :** तुम उस से कहीं भाग नहीं सकते। **27 :** रोज़े क़ियामत जब तुम क़ब्रों से निकलोगे **28 :** ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया : लपट में धूआं हो तो उस के सब अज्ज़ा जलाने वाले न होंगे कि ज़मीन के अज्ज़ा शामिल हैं जिन से धूआं बनता है और धूएं में लपट हो तो वोह पूरा सियाह और अंधेरा न होगा कि लपट की रंगत शामिल है, उन पर बे धूएं की लपट भेजी जाएगी जिस के सब अज्ज़ा जलाने वाले और बे लपट का धूआं जो सख़्त काला अंधेरा और उसी के वज्हे करीम की पनाह। **29 :** उस अ़ज़ाब

www.dawateislami.net

السَّمَآءُ فَكَانَتۡ وَرۡدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾
फट जाएगा तो गुलाब के फूल सा हो जाएगा[30] जैसे सुर्ख़ नरी (सुर्ख़ रंगा हुवा चमड़ा) तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

فَیَوۡمَئِذٍ لَّا یُسۡـَٔلُ عَنۡ ذَنۡۢبِهٖۤ اِنۡسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
तो उस दिन[31] गुनहगार के गुनाह की पूछ न होगी किसी आदमी और जिन्न से[32] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾ یُعۡرَفُ الۡمُجۡرِمُوۡنَ بِسِیۡمٰهُمۡ فَیُؤۡخَذُ بِالنَّوَاصِیۡ وَ
झुटलाओगे मुजरिम अपने चेहरे से पहचाने जाएंगे[33] तो माथा और पाउं पकड़ कर जहन्नम में डाले

الۡاَقۡدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِیۡ
जाएंगे[34] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे[35] येह है वोह जहन्नम जिसे

یُكَذِّبُ بِهَا الۡمُجۡرِمُوۡنَ ﴿٤٣﴾ یَطُوۡفُوۡنَ بَیۡنَهَا وَبَیۡنَ حَمِیۡمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾ فَبِاَیِّ وقف لازم
मुजरिम झुटलाते हैं फेरे करेंगे इस में और इन्तिहा के जलते खौलते पानी में[36] तो अपने

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾ وَلِمَنۡ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَیِّ ع ٢ ١٢
रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे[37] उस के लिये दो जन्नतें हैं[38] तो अपने

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾ ذَوَاتَاۤ اَفۡنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे बहुत सी डालों वालियां[39] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾ فِیۡهِمَا عَیۡنٰنِ تَجۡرِیٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾
झुटलाओगे उन में दो चश्मे बहते हैं[40] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

से न बच सकोगे और आपस में एक दूसरे की मदद न कर सकोगे, बल्कि येह लपट और धूआं तुम्हें मह्शर की त़रफ़ ले जाएंगे, पहले से इस की ख़बर दे देना येह भी अल्लाह तआ़ला का लुत्फ़ो करम है ताकि उस की ना फ़रमानी से बाज़ रह कर अपने आप को इस बला से बचा सको। 30 : कि जगह जगह से शक़ और रंगत का सुर्ख़। (ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ) 31 : या'नी जब कि क़ब्रों से उठाए जाएंगे और आस्मान फटेगा। 32 : उस रोज़ मलाएका मुजरिमीन से दरयाफ़्त न करेंगे, उन की सूरतें ही देख कर पहचान लेंगे और सुवाल दूसरे वक़्त होगा जब कि लोग मौक़िफ़ में जम्अ़ होंगे। 33 : कि उन के मुंह काले और आंखें नीली होंगी 34 : पाउं पीठ के पीछे से ला कर पेशानियों से मिला दिये जाएंगे और घसीट कर जहन्नम में डाले जाएंगे और येह भी कहा गया है कि बा'ज़े पेशानियों से घसीटे जाएंगे बा'ज़े पाउं से। 35 : और उन से कहा जाएगा 36 : कि जब जहन्नम की आग से जल भुन कर फ़रियाद करेंगे तो उन्हें जलता खौलता पानी पिलाया जाएगा और इस के अ़ज़ाब में मुब्तला किये जाएंगे, खुदा की ना फ़रमानी के इस अन्जाम से आगाह फ़रमा देना अल्लाह तआ़ला की ने'मत है। 37 : या'नी जिसे अपने रब के हुज़ूर रोज़े क़ियामत मौक़िफ़ में ह़िसाब के लिये खड़े होने का डर हो और वोह मआ़सी तर्क करे और फ़राइज़ बजा लाए 38 : जन्नते अ़दन और जन्नते नईम और येह भी कहा गया है कि एक जन्नत रब से डरने का सिला और एक शहवात तर्क करने का सिला। 39 : और हर डाली में क़िस्म क़िस्म के मेवे। 40 : एक आबे शीरीं का और एक शराबे पाक का या एक तस्नीम दूसरा सल्सबील।

www.dawateislami.net

فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ۚ﴿٥٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾

उन में हर मेवा दो दो क़िस्म का तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۚ﴿٥٤﴾

ऐसे बिछोनों पर तक्या लगाए जिन का अस्तर क़नादीज़ का[41] और दोनों के मेवे इतने झुके हुए कि नीचे से चुन लो[42]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन बिछोनों पर वोह औरतें हैं कि शोहर के सिवा किसी को आंख उठा कर नहीं देखतीं[43]

اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۚ﴿٥٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ

उन से पहले उन्हें न छुवा किसी आदमी और न जिन्न ने तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे गोया वोह

الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ۚ﴿٥٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَآءُ

ला'ल और मूंगा हैं[44] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे नेकी का बदला

الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۚ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ

क्या है मगर नेकी[45] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे और

دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ۚ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۙ﴿٦٣﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ۚ﴿٦٤﴾

इन के सिवा दो जन्नतें और हैं[46] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे निहायत सब्ज़ी से सियाही की झलक दे रही हैं

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ﴿٦٥﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ۚ﴿٦٦﴾ فَبِاَيِّ

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में दो चश्मे हैं छलक्ते हुए तो अपने

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ۚ﴿٦٨﴾ فَبِاَيِّ

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में मेवे और खजूरें और अनार हैं तो अपने

41 : या'नी संगीन रेशम का, जब अस्तर का येह हाल है तो अब्रा कैसा होगा سُبْحٰنَ اللّٰه 42 : हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि दरख़्त इतना क़रीब होगा कि अल्लाह तआ़ला के प्यारे खड़े बैठे उस का मेवा चुन लेंगे। 43 : जन्नती बीबियां अपने शोहर से कहेंगी मुझे अपने रब के इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम जन्नत में मुझे कोई चीज़ तुझ से ज़ियादा अच्छी नहीं मा'लूम होती तो उस ख़ुदा की हम्द जिस ने तुझे मेरा शोहर किया और मुझे तेरी बीबी बनाया। 44 : सफ़ाई और ख़ुशरंगी में, हदीस शरीफ़ में है कि जन्नती हूरों के सफ़ाए अबदान का येह आ़लम है कि उन की पिंडली का मग़्ज़ इस त़रह नज़र आता है जिस त़रह आबगीने की सुराही में शराबे सुर्ख़। 45 : या'नी जिस ने दुन्या में नेकी की उस की जज़ा आख़िरत में एहसाने इलाही है, हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि जो "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" का क़ाइल हो और शरीअ़ते मुहम्मदिय्यह पर आ़मिल, उस की जज़ा जन्नत है। 46 : हदीस शरीफ़ में है कि दो जन्नतें तो ऐसी हैं जिन के ज़ुरूफ़ और सामान चांदी के हैं और दो जन्नतें ऐसी कि जिन के ज़ुरूफ़ व अस्बाब सोने के और एक क़ौल येह भी है कि पहली दो जन्नतें सोने और चांदी की और दूसरी याक़ूत व ज़बर जद की।

www.dawateislami.net

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۹﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿۷۰﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में औ़रतें हैं आ़दत की नेक सूरत की अच्छी तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۱﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿۷۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

झुटलाओगे हूरें हैं ख़ैमों में पर्दा नशीन[47] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۳﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿۷۴﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

झुटलाओगे उन से पहले उन्हें हाथ न लगाया किसी आदमी और न जिन्न ने तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۵﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿۷۶﴾ فَبِاَيِّ

झुटलाओगे[48] तक्या लगाए हुए सब्ज़ बिछोनों और मुनक़्क़श ख़ूब सूरत चांदनियों पर तो अपने

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۷﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿۷۸﴾ ع

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे बड़ी बरकत वाला है तुम्हारे रब का नाम जो अ़ज़मत वाला बुज़ुर्गी वाला

اٰياتها ۹۶ | (۵۶) سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ (۴۶) | ركوعاتها ۳

सूरए वाक़िअ़ह मक्किय्या है, इस में छियानवे आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿۱﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿۲﴾ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿۳﴾ وقف لازم

जब हो लेगी वोह होने वाली[2] उस वक़्त उस के होने में किसी को इन्कार की गुन्जाइश न होगी किसी को पस्त करने वाली[3] किसी को बुलन्दी देने वाली[4]

اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿۴﴾ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿۵﴾ فَكَانَتْ هَبَآءً

जब ज़मीन कांपेगी थरथरा कर[5] और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे चूरा हो कर तो हो जाएंगे जैसे रोज़न (सूराख़) की धूप में ग़ुबार के

47 : कि उन ख़ैमों से बाहर नहीं निकलतीं, येह उन की शराफ़त व करामत है। ह़दीस शरीफ़ में है अगर जन्नती औ़रतों में से ज़मीन की त़रफ़ किसी की एक झलक पड़ जाए तो आस्मान व ज़मीन के दरमियान की तमाम फ़ज़ा रोशन हो जाए और ख़ुश्बू से भर जाए और उन के ख़ैमे मोती और ज़बर जद के होंगे। 48 : और उन के शोहर जन्नत में ऐ़श करेंगे 1 : सूरए वाक़िअ़ह मक्किय्या है सिवाए आयत "اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ" और आयत "ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ" के, इस सूरत में तीन 3 रुकूअ़ और छियानवे या सत्तानवे या निनानवे आयतें और तीन सो अठत्तर 378 कलिमे और एक हज़ार सात सो तीन 1703 ह़र्फ़ हैं। इमाम बग़वी ने एक ह़दीस रिवायत की है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स सूरए वाक़िअ़ह को हर शब पढ़े वोह फ़ाक़े से हमेशा मह़फ़ूज़ रहेगा। (خازن) 2 : या'नी जब क़ियामत क़ाइम हो जो ज़रूर होने वाली है। 3 : जहन्नम में गिरा कर 4 : दुख़ूले जन्नत के साथ। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जो लोग दुन्या में ऊंचे थे क़ियामत उन्हें पस्त करेगी और जो दुन्या में पस्ती में थे उन के मर्तबे बुलन्द करेगी और येह भी कहा गया है कि अहले मा'सियत को पस्त करेगी और अहले त़ाअ़त को बुलन्द। 5 : ह़त्ता कि इस की तमाम इमारतें गिर जाएंगी।

www.dawateislami.net